CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

B
1-25-5

हिन्दी व्याकरण

की

प्रस्ताविका सूची

और

कार्य्य नियमावली।

आरा नागरी प्रचारिणी (व्याकरण समिति विभाग) द्वारा प्रकाशित।

पटना—"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर.
बाबू चण्डीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

INDIRA GANDHI
NATIONAL CENTRE
FOR THE ARTS

ACC NO.... . ...
DATE ....

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आरा नागरी प्रचारिणी सभा

बुध। २५। १२। १९६४।

निवेदन।

मान्यवर,

आप के निकट हिन्दी व्याकरण समिति की नियमावली तथा प्रस्ताविका सूची भेजी जाती है। श्रीमान् कृपाकर लिखें कि आप कौन सा अध्याय अथवा विषय लिखना चाहते हैं और किस विषय का संशोधक होना पसंद करते हैं। आशा है कि श्रीमान् पत्र पाने की तिथि से एक सप्ताह के भीतर पत्र द्वारा कृतार्थ करेंगे, जिस में लेखक और संशोधकों की नामावली शीघ्र प्रकाशित होकर श्रीमान् के समीप उपस्थित हो और यह शुभ कार्य शीघ्र आरम्भ हो।

भवदीय

सकलनारायण पाण्डेय

मंत्री, हिन्दी व्याकरण समिति विभाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आरा नागरीप्रचारिणी सभा ।

हिन्दीव्याकरणसमितिविभाग ।

सभापति ।

श्रीमान् राजाकमलानन्द सिंह, श्रीनगर—पूर्णिया ।

मंत्री ।

काव्यतीर्थ व्याकरणतीर्थ पं० सकलनारायण पाण्डेय—आरा ।

उपमंत्री ।

पं० जयानन्द मिश्र—आरा ।

सभासदगण ।

(१) बाबू गोपाल राम—सम्पादक जासूस—गहमर ।

(२) पं० पुत्तनलाल—सम्पादक मोहनी—कन्नौज ।

(३) पुरोहित पं० गोपीनाथ, बी० ए० कोठी जयपुर—आबू ।

(४) पं० ब्रजरत्न भट्टाचार्य—मुरादाबाद सिटी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) पं देवीप्रसाद शुक्ल बी० ए०—झसँवां, कानपुर।

(६) बिहारीलाल चौबे—ट्रेनिङ्ग स्कूल, पटना।

(७) चन्द्रधर शर्मा बी० ए०—खेतड़ी भवन, आबू।

(८) सूर्य्यनारायण शर्मा—नागरी-साहित्य प्रचारिणी सभा—सदर बाज़ार-जब्बलपुर।

(९) महावीरप्रसाद मालवीय वैद्य-कोट—मिरजापुर।

(१०) पं० महादेवशरण पाण्डेय—बलुआ, गुठनी—सारन।

(११) पं० रामलोचन पाण्डेय—विष्णुपुर, भागलपुर।

(१२) पं० कविनाथ मिश्र—मुज़फ़्फ़रपुर।

(१३) श्रीमान् राजारामपाल सिंह-रामपुर हौस—कालाकांकर।

(१४) पं० अनन्तराम पाण्डेय—रायगढ़ सी० पी०।

(१५) ला० जगन्नाथ प्रसाद—बुरहानपुर।

(१६) पं० बुलाकी राम शास्त्री पञ्जाबभूषण, विद्यासागर, एम्० आर० एस्०—मेयो कौलेज—अजमेर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१७) पण्डित सोमनाथभारखण्डी, बी० ए०—राकूटर्स बिलडिङ्ग, कलकत्ता।

(१८) पं० भुवनेश्वरप्रसाद मिश्र—दर्भङ्गा।

(१९) पं० लक्ष्माराम मेहता—बूंदी-राजपूताना।

(२०) पं० उमापतिदत्त शर्मा, बी० ए०, एम० आर० ए० एस०—चिल्हैटी, पो० मझवारी-आरा।

(२१) पं० बालकृष्ण भट्ट—हिन्दी प्रदीप—प्रयाग।

(२२) पं० गणेशप्रसाद शर्मा—भारत सुदशा-प्रवर्तक, फर्रुखाबाद।

(२३) पं० शिवप्रसाद शर्मा—कटनी, मुंडवारा।

(२४) बा० जैनेन्द्रकिशोर-आरा।

(२५) पं० गिरिधर शर्मा-झालरापाटन, राजपूताना।

(२६) पं० लोचनप्रसाद—बालपुर।

(२७) पं० विष्णुदत्त शुक्ल बी० ए०—सिहोरा रोड।

(२८) बाबू शिवचंद भरतिया—इन्दौर।

(२९) पं० रामावतारशर्मा साहित्याचार्य काव्य-तीर्थ, एम्० ए०-पटना कौलेज।

(३०) पं० देवदत्त शर्मा—कालाकांकर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३१) पं० शिवनाथ शर्मा आनन्द सम्पादक-लखनऊ।

(३२) बा० शिवनारायण सिंह—कालाकांकर।

(३३) श्रीयुत् लाला मुन्शीराम—गुरुकुल कार्यालय, लाहौर।

(३४) बाबू हरसूप्रसाद सिंह—आरा।

(३५) पं० नन्दकुमारदेव शर्मा, सम्पादक स्वदेश बन्धु—लाहौर।

(३६) पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, सम्पादक सरस्वती—झुही, कानपुर।

(३७) पं० श्रीराधाचरण गोस्वामी—वृन्दावन।

(३८) श्रीयुत् पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल—वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई।

(३९) पं० गुरुदत्त शर्मा राज्य पण्डित—पो० खेतड़ी, शेखावाटी।

(४०) ज्योतिषरत्न जीयालाल राज्यवैद्य, सम्पादक जीयालाल प्रकाश—फर्रुखाबाद।

(४१) बाबू कवि कुमार शेरसिंह वर्मा—कर्नवास ज़िला बुलन्दशहर।

(४२) बाबू प्रयाग नारायण संगम। संगम-मिडिल स्कूल, लखनऊ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४३) त्रिपाठी पं० वेणीमाधव शर्मा—कन्या-विद्यालय, बेतिया।

(४४) महावीरसिंह वर्मा—पो० अटिया, ज़िला उनाव।

(४५) पं० सोमदेव शर्मा गुलेरी, मन्त्री नागरी-भवन पुस्तकालय, जयपुर, राजपूताना।

(४६) पं० लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय—परकोटा सागर, सी० पी०।

(४७) श्रीयुत् विनायकराव असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेन्ट ट्रेनिङ्ग इंसटिट्यूशन जब्बलपुर।

(४८) पं० बनवारी लाल चौबे—बन्दोबस्त मुरादाबाद।

(४९) माधवराव सप्रे बी० ए०—हिन्दी ग्रंथ-प्रकाशक मण्डली कार्यालय, नागपुर।

(५०) पं० कुमारद्विचन्द्र वैद्य—लक्ष्मण गढ़, ज़िला सीकर।

(५१) बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०—लाहौरी टोला, काशी।

(५२) पं० गणपति लाल चौबे, एजेन्सी फून्स्पेक्टर स्कूल क्वूडेटरीज़।

(५३) पं० कामताप्रसाद गुरु—रायपुर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५४) श्यामबिहारी मिश्र शुकदेव बिहारी मि—अडटावा।

(५५) गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य मन्त्री ब्रज मण्डल कार्यालय—मथुरा।

(५६) बाबू रायदेवीप्रसाद पूर्ण, वकील—कानपुर।

(५७) बाबू गंगाप्रसाद गुप्त—काशी।

(५८) पं० कामता प्रसादतिवारी—नार्मल स्कूल—रायपुर, सी० पी०।

(५९) बाबू राजेन्द्रप्रसाद हेड मास्टर ज़िला स्कूल—मुंगेर।

(६०) पण्डित जनार्दन झा—गोलकोठी-मुंगेर।

(६१) बाबू सुरेश्वर बी. ए.-गोलकोठी—मुंगेर।

(६२) बाबू कृष्णजी सहाय—आरा।

(६३) बाबू ब्रजनन्दन सहाय वकील—आरा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(अ) पुस्तक छपने के बाद में जिन सभ्यों ने जिस विषय को लिखा है अगर वे चाहें तो उन को सब से पहले प्रूफ़ संशोधन का अधिकार मिलेगा। परन्तु किसी कारणवश यदि वे इस कार्य से अपनी अनिच्छा प्रगट करें तो मंत्री जिस से चाहें प्रूफ़ संशोधन करवा लेंगे।

(आ) दूसरे से संशोधन कराने के बाद पुस्तक छप जाने पर लेखक का यह उज्र नहीं सुना जायगा कि उन के मूल लेख से यह छपा हुआ विषय कुछ फरक है।

(८) मंत्री को अधिकार होगा कि वे सम्पादक तथा सुलेखकों से सम्मति लें।

(९) इस की छपाई आदि की सिद्धि के लिये प्रति सभ्य यत्न कर सकता है।

(१०) समिति आ० ना० प्र० सभा की सम्मति से अपने नियमों को घटा बढ़ा सकती है।

भवदीय

कमलानन्दसिंह।

सभापति, हिन्दी व्याकरणसमिति विभाग

तथा

मन्त्री—सकलनारायण पाण्डेय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ नमः शिवाय।

हिन्दीव्याकरण।

(प्रस्ताविका)

उपक्रमणिका।

(१) हिन्दी की उत्पत्ति (२) हिन्दी और उर्दू का सम्बन्ध (३) हिन्दी में व्यवहृत भिन्न २ भाषाओं के शब्दों का प्रवेशकाल (४) संस्कृत शब्दों का प्राकृत में और उस का हिन्दी में रूपान्तर (५) विभक्ति, सर्वनाम और क्रिया की उत्पत्ति (६) हिन्दी शब्दों का समयानुसार रूपपरिवर्त्तन (७) व्यापक साधुभाषा में व्याकरण बनने की योग्यता (८) नये व्याकरण बनाने का उद्देश्य (९) प्रस्तूयमान व्याकरण का अधिकारिविचार (१०) अन्यान्य आवश्यक बातें।

पहला अध्याय।

(१) हिन्दी व्याकरण का प्रयोजन (२) हिन्दी व्याकरण का प्रकरण विभाग (३) वर्णात्मक शब्दों में व्याकरण की विषयता।

दूसरा अध्याय।

(१) स्वर, व्यञ्जन, अनुस्वार और विसर्ग (२) अनुनासिक (३) हिन्दी का अनावश्यक स्वर (४)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुस्वरित अक्षार (५) अक्षरों का संयोग (६) मात्राओं का संयोग (७) अक्षरों का रूपपरिवर्तन (८) अक्षरों का उच्चारणस्थान (९) विशेष २ भाषाओं के शब्द लिखने के लिये विशेष २ अक्षरों की कल्पना (१०) अक्षरों के लिखने की शैली और रूप ।

तीसरा अध्याय ।

(संज्ञा अथवा परिभाषा) ।

(१) सन्धि, प्रकृतिभाव, नाम, प्रातिपदिक, आख्यात, प्रकृति, प्रत्यय, विभक्ति, पद, उपपद, व्यास वाक्य विग्रह और व्युत्पत्ति ।

चौथा अध्याय (शब्द) ।

(१) शब्दविचार (२) तत्सम तद्भव और देशज शब्दों का सोदाहरण भेद-निरूपण (३) रूढ़ि, यौगिक और योगरूढ़ि (४) संस्कृत प्राकृत और व्यवहृत विदेशी भाषाओं के शब्द (५) उन के पहचानने की रीति (६) शब्दों की व्युत्पत्ति (७) शब्दों का जातिवाचकादिक भेद ।

पांचवां अध्याय (सन्धि) ।

(१) स्वरसन्धि (२) व्यञ्जनसन्धि (३) विसर्गसन्धि (४) प्रकृतिभाव (५) षत्वणत्वविधान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(६) स्वाभाविकबहुवचनत्व (७) तद्भव और देशज शब्दों में सन्धि का अभाव (८) विदेशी शब्दों के साथ संस्कृत शब्दों की सन्धि का अभाव ।

छठां अध्याय (अर्थ) ।

(१) सार्थक शब्दों की व्याकरण में उपयुक्तता (२) अर्थों का भेद (३) निरर्थक शब्द (४) निरर्थक शब्दों का किसी २ विशेष अवस्था में प्रयोग ।

सातवां अध्याय (नाम) ।

(१) सार्थक शब्दों का सोदाहरण भेदविचार (२) शब्दों की विकृत अवस्था (३) शब्दों की अविकृत अवस्था (४) जातिवाचकादि शब्दों का लक्षण और उदाहरण ।

आठवां अध्याय (संख्या) ।

(१) वचन (२) नाम और क्रियाओं के वचन (३) नाम (प्रातिपदिक-संज्ञा) के साथ जोड़ी जानेवाली विभक्तियां (४) केवल एक वचनान्त प्रातिपदिक (५) केवल बहुवचनान्त प्रातिपदिक (६) बहुवचन चिन्ह के अभाव में भी बहुवचनत्व प्रकट करनेवाले प्रातिपदिक (७) केवल एकवचनान्त क्रिया (८) विशेष २ अवस्था में एक वचन के स्थान में बहुवचन और बहुवचन के स्थान में एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वचन (९) बहुवचनान्त बनाने का ढंग (१०) विदेशी व्यवहृत शब्दों का बहुवचनान्त रूप (११) अकारान्त तथा उकारान्त शब्दों की प्रथमा विभक्ति में बहुवचनान्तता (१२) मतभेद तथा वह आदि के वचन का स्वतंत्रविचार (१३) प्रत्येकार्थ शब्द के योग में वचनविचार (१४) सब, गण तथा लोग आदि शब्दों का वचनविचार (१५) संख्यावाचक शब्दों की एक वचनान्तता और बहुवचनान्तता।

नवां अध्याय (लिङ्गविचार)।

[१] शब्दों की पुंलिङ्गता और स्त्रीलिङ्गता [२] पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग का लक्षण [३] प्राणिवाचक शब्दों का लिङ्गभेद [४] अचेतनवाचक शब्दों का लिङ्गभेद [५] क्रियाओं का कर्त्ता और कर्म के अनुसार लिङ्गपरिवर्तन [६] विशेषण का लिङ्गविचार [७] कई एक अव्ययों का भी लिङ्गानुसरण [८] चेतनपुंलिङ्ग शब्द से स्त्रीलिङ्ग बनाने की रीति [९] स्त्रीप्रत्यय के बिना भी बहुत से शब्दों का लिङ्गबोधकत्व [१०] संस्कृत शब्दों का स्त्रीलिङ्गानुशासन [११] अदन्त आदन्त—इदन्त—उदन्त तथा ऊदन्त हिन्दी शब्दों का यथा सम्भव स्त्रीलिङ्गानुशासन [१२] सन्देह-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्था में लिङ्गज्ञान की रीति [१३] अज्ञात शब्दों का एकही लिङ्ग में प्रयोग करना [१४] ङीप् और टाप् आदिक संस्कृत स्त्री प्रत्ययों के जोड़ने की रीति [१५] विदेशी व्यवहृत शब्दों का लिङ्गज्ञान।

दशवां अध्याय (नाम)।

[१] विकृत शब्द की साधनिका [२] अविकृत शब्द की साधनिका [३] विकृताविकृत शब्द की साधनिका [४] क्रियाविशेषण शब्द की साधनिका (५) स्त्रीलिङ्ग शब्दों की साधनिका [६] सर्वनाम की साधनिका [७] भिन्न २ स्वरान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप (८) भिन्न २ स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप (९) केवल बहुवचनान्त शब्दों के रूप (१०) केवल एकवचनान्त शब्दों के रूप (११) गुणवाचक शब्दों के सभी रूपों के भावाभाव का विचार।

ग्यारहवां अध्याय (कारक)।

(१) कारक (१२) प्रथमादिक सातविभक्तियां (३) कारकों का भेद (४) भिन्न२ कारकों में भिन्न२ विभक्तियां (५) कर्तृकर्मादिक संज्ञाओं का विचार (६) षष्ठी विभक्ति का कारकाकारकत्वविचार (७) 'ने' का स्वतंत्र विचार (८) 'को' का स्वतंत्र विचार (९) 'के'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा 'की' का स्वतंत्र विचार (१०) द्विकर्मक धातुओं के कर्मों का विभक्तिविचार और प्रयोज्य कर्ता में विभक्तिपरिवर्तन (११) दानार्थक धातु के कर्म में विभक्ति का विचार (१२) विभक्ति का लोप (१३) कारकों का उक्तानुक्तत्वज्ञान (१४) कहीं २ दो २ विभक्तियां एक साथ (१५) अव्यय के साथ भी कहीं २ विभक्ति का प्रयोग (१६) कृत्प्रत्यय के योग में विभक्तियों का हेरफेर (१७) उपपद (किसी शब्द के योग में होनेवाली) विभक्तियां (१८) विभक्तियों का अर्थ और व्यवहार (१९) विभक्तियोंको साथ अथवा पृथक् लिखनेका विचार ॥

बारहवां अध्याय (समास)।

(१) समास (२) समास का भेद (३) केवल समास (४) अव्ययीभाव (५) तत्पुरुष उपपद, रूपक, प्रादि समास, कर्मधारय, द्विगु तथा द्वितीयादिक (६) बहुव्रीहि (७) द्वन्द्व (८) समासान्त विचार (९) समासार्थविचार (१०) समास किये हुए शब्दों का लिङ्गविचार ॥

तेरहवां अध्याय (तद्धित)।

(१) तद्धित (२) तद्धितप्रत्यय (३) उन के अर्थ (४) उदाहरण के साथ तद्धितप्रत्ययान्त शब्दों की साधनिका (५) तद्धितान्त शब्दों का उक्तानुक्तत्वविचार। शब्दों का द्वित्व ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौदहवां अध्याय (अव्यय)।

(१) अव्यय (२) अव्युत्पन्न अव्यय (३) कृदन्तीय अव्यय (४) तद्धितान्त अव्यय (५) कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, सम्बन्धवाचक विस्मयबोधक, संयोजक, विभाजक, और समुच्चयादिक अव्ययों का अर्थ और उन का व्यवहार (६) और, किन्तु, परन्तु, जब, यदि, तथापि, तथा, एवम् आदि अव्ययों का विशेष विचार (७) उपसर्ग और विभक्ति प्रतिरूपक अव्यय ॥

पन्द्रहवां अध्याय (आख्यात)।

(१) क्रिया (२) क्रियाओं का भेद (३) भाव शब्द का क्रियापर्यायवाचकत्व (४) भाव का भेद (५) साध्य भाव के लिङ्ग संख्यादिक का विचार।

सोलहवां अध्याय (धातु)।

(१) धातु, धात्वर्थ, अकर्मक तथा सकर्मक पहचानने की रीति (४) द्विकर्मक धातु (५) परार्थक धातु (६) आत्मार्थक धातु (७) उभयार्थक धातु (८) संयुक्तधातु (९) अतिशयार्थक धातु (१०) प्रेरणार्थक धातु (११) नाम धातु (१२) व्यवहृत संस्कृत धातु (१३) व्यवहृत विदेशी धातु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्रहवां अध्याय (काल)।

(१) काल (२) काल का भेद (३) काल का क्रिया में सम्बन्ध (४) सामान्यभूत और भविष्यत् में वर्तमानकाल का व्यवहार (५) पूर्णभूत और भविष्यत् में भी कवि के प्रतिभाबल से वर्तमानकाल का प्रयोग (६) सम्भावना तथा विधिक्रियाओं की भविष्यत्कालिता (७) भीतकालिक क्रियाओं का भेद (८) भिन्न २ कालवाले शब्दों का परस्पर सम्बन्ध और कालपरिवर्तन (९) कालसम्बन्धी अयुक्त प्राचीन मतों का खण्डन।

अट्ठारहवां अध्याय (पुरुष)।

(१) पुरुष (२) पुरुषों का भेद (३) पुरुष में क्रिया के वचन का सम्बन्ध (४) दोनों अथवा तीनों पुरुषों के योग में क्रिया का विशेष पुरुष की ओर झुकाव (५) उत्तमपुरुष के अर्थ में प्रथम पुरुष (६) मध्यमपुरुष के अर्थ में प्रथमपुरुष (७) कई पुरुषों के योग में क्रिया के एकवचनान्त और बहुवचनान्त का विचार।

उन्नीसवां अध्याय (क्रिया की साधनिका)।

(१) जोड़े जानेवाले आख्यात प्रत्यय (२) प्रत्ययों के योग से धातुओं का रूपपरिवर्तन (३) प्रकृति और प्रत्ययों के बीच में होनेवाले आगम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) भवत्यर्थक होना धातु की साधनिका और उस के रूप (५) अस्त्यर्थक होना धातु की साधनिका और उस के रूप (६) कईएक अकर्मक और सकर्मक धातुओं के रूप और उन की साधनिका ।

बीसवां अध्याय (प्रेरणार्थक क्रिया) ।

(१) प्रेरणार्थक धातु बनाने के नियम (२) प्रेरणार्थक से पुनः प्रेरणार्थक बनाना (३) प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने से धातुओं का रूपपरिवर्तन (४) प्रेरक और प्रेरयितव्य (प्रयोजक और प्रयोज्य) कर्ता में भिन्न २ विभक्तियां (५) व्याकरण से सिद्ध होने पर भी अप्रयुक्त का अनभिधान (६) होना आदि धातु के प्रेरणार्थक प्रयोग का अनभिधान ।

इक्कीसवां अध्याय (नाम धातु की क्रिया) ।

(१) नाम से धातु बनानेवाला प्रत्यय (२) उस का अर्थ (३) नाम धातु बनाने की विधि और उस का उदाहरण (४) नाम धातु की सिद्धक्रिया ।

बाईसवां अध्याय (अतिशय पौनः पुन्यार्थक क्रिया) ।

(१) अतिशयार्थक प्रत्यय (२) अतिशयार्थक धातु बनाने की विधि (३) अतिशयार्थक धातु का संयुक्त धातु से भेद (४) अतिशयार्थक प्रत्यय का रूपपरिवर्तनाभाव (५) अतिशयार्थक प्रत्यय से बारंबार अर्थ का बोध (६) रूप ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेईसवां अध्याय (इच्छार्थक क्रिया) ।

(१) इच्छार्थक प्रत्यय (२) इच्छार्थक धातु बनाने की विधि (३) संयुक्त धातु से इच्छार्थक धातु का भेद (४) रूप ।

चौबीसवां अध्याय (वाच्य) ।

(१) वाच्य (२) कर्तृवाचक क्रिया (३) कर्मवाचक (४) भाववाचक क्रिया (५) कर्मकर्तृवाचक क्रिया (६) करणकर्तृवाचकादि क्रिया की सम्भावना (७) भाववाचक क्रिया का लिङ्गसंख्याविचार (८) उक्त क्रियाओं के बनाने की रीतियां (९) वाच्यविषयक अयुक्तमतों का खण्डन (१०) द्विकर्मकधातु का उक्तानुक्तत्वविचार ।

पच्चीसवां अध्याय (क्रिया प्रकीर्णविचार) ।

(१) एक क्रिया में कई प्रत्यय (२) लुप्तक्रिया (३) लुप्तक्रियांश ।

छब्बीसवां अध्याय ।

(१) कृत् (२) कृत्य (३) कृत्प्रत्ययों का अर्थ (४) कृत्प्रत्ययों का काल (५) कर्तृवाचकादि प्रत्ययों का उदाहरण (६) हिन्दी में साध्यभावार्थक प्रत्यय का अभाव (७) विशेष प्रत्ययों का विधान (८) प्रत्ययों का ऊहापोह (९) "चाहिये" प्रत्यय का विशेष विचार (१०) "कर" तथा "करके" प्रत्यय का विशेष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विचार (११) "ना' प्रत्यय का विशेष विचार (१२) संस्कृत प्रत्यय (१३) विदेशी प्रत्यय)१४) कृत्प्रत्ययों के योग से विभक्ति में हेरफेर।

सत्ताईसवां अध्याय (वाक्य)।

(१) वाक्य (२) वाक्यों का भेद (३) महावाक्य (४) आकांक्षा, आसक्ति और योग्यता (५) गर्भित वाक्य (६) गर्भित वाक्य का त्याग (७) वाक्य में विभक्ति रहित दो भिन्न २ लिङ्गवाले कर्म के योग में क्रिया का प्रयोग (८) भिन्न २ लिङ्गवाले सम्बन्धियों के योग में षष्ठी विभक्ति का विचार।

अट्ठाईसवां अध्याय (विशेष्य और विशेषण)।

(१) विशेष्य (२) विशेषण (३) विशेषणों का भेद (४) क्रियाविशेषण और उस के पहचानने की रीति (५) विशेष्य और विशेषण की तुल्यलिङ्गता (६) कितने विशेषणों की स्वतंत्रता (७) कभी २ विशेषण का विशेष्य के ऐसा प्रयुक्त होना (८) कभी२ क्रिया विशेषण का अन्त में प्रयुक्त होने पर अधिक शक्ति प्रकट करना।

उन्तीसवां अध्याय (उद्देश्य और विधेय)।

(१) उद्देश्य (२) विधेय (३) विधेय विशेषण (४) विधेय विशेषण का स्थानभ्रष्ट होने पर अर्थ बदलना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसवां अध्याय (वाक्ययोजना) ।

(१) कर्ता और कर्मादि के प्रयुक्त होने का स्थान (२) प्रश्नार्थक शब्द के प्रयोग का विचार (३) कभी २ साधारण रीति के विपरीत होनेवाली वाक्यरचना (४) लुप्तकर्तृक वाक्य (५) लुप्त कर्मक वाक्य (६) वाक्य में शक्ति सञ्चालन के लिये दो तीन पर्यायवाचक शब्दों का व्यवहार (७) दो २ तीन २ क्रियाओं में एकही आख्यात प्रत्यय का प्रयोग ।

इकतीसवां अध्याय (चिन्ह ।

(१) चिन्ह (२) चिन्हों का भेद (३) चिन्हों के व्यवहार करने की शैली (४) हिन्दी में भ्रमवश प्रचलित अशुद्ध चिन्ह (५) अनुपयुक्त अंगरेज़ी चिन्ह ।

बत्तीसवां अध्याय (अन्वय) ।

(१) अन्वय (२) अन्वय का भेद (३) सभी अवस्थाओं में खण्डान्वय की प्रशंसा (४) दण्डान्वय में वाक्यों की अशुद्धियां (५) दण्डान्वय में विभक्त्यादिकों का परिवर्तन (६) बड़ी २ पुस्तकों और वक्तृताओं में दण्डान्वय का आदर ।

तेंतीसवां अध्याय (पदपरिचय ।)

(१) पदव्याख्या (Parsing) (२) पदव्याख्या की रीति (३) उदाहरण ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौंतीसवां अध्याय (महावरा)।

(१) महावरा (प्रयुक्तता अथवा वाग्धारा। (२) हिन्दी का महावरा (३) उर्दू का महावरा।

पैंतीसवां अध्याय (वाक्य वैचित्र्य)।

(१) एक वाक्य को कई ढंग से लिखना (२) सरल वाक्य की प्रशंसा (३) कार्यवश कठिन और विस्तृत वाक्य की आवश्यकता (४) कभी२ व्याकरण की भूल का दोषाभाव (५) प्राचीन सुलेखकों की अशुद्धियों की आर्षता।

छत्तीसवां अध्याय (खड़ी बोली की कविता)।

(१) व्याकरण सम्बन्धिनी स्वतंत्रता (२) विकल्पित प्रयोग में दोनों का आदर (३) शब्दों का अङ्ग भङ्ग। (४) व्रजभाषा का सामयिक हिन्दी से भिन्न २ विषयों का व्याकरण।

सैंतीसवां अध्याय १ वाक्यविन्यास (Analysis)

(१) वाक्यविन्यास (२) उस का गुण (३) वाक्य (४) उपवाक्य (Clause) (५) शब्दस्तोक (Phrase (६) वाक्यभेद (७) उपवाक्यभेद (८) वाक्य व्यास की रीति उदाहरण सहिता।

अड़तीसवां अध्याय (काव्यनियमावली Prosody)।

(१) गद्य, (२) पद्य, (३) गद्य पद्य का भेद (४) अनेक शब्द जो केवल पद्य ही में व्यवहृत होते हैं,

Kirtikant Sharma Collection, Nagarjuna

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन के उदाहरण (५) काव्य सम्बन्धिनी स्वतन्त्रता (Poetical License) (६) अलङ्कार (Such as Simile, Metaphor &c.) (७) शब्दालङ्कार (८) अनुप्रास (९) अन्त्यानुप्रासरहित पद्य (१०) गण (११) मुख्यमुख्य वृत्तों का लक्षण और उदाहरण।

उनचालीसवां अध्याय (फुटकर)।

IGNCA
Acc. No.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh